IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी चेतना

Anita M. Rathva
Ph.D. Research Scholar
Hemchandracharya North Gujarat University, Patan, Gujarat, India

प्रस्तावना:

प्राचीन काल में भारत में नारीयों की स्थिति बहुत ही सम्मानपूर्ण थी । उन्हें पूजनीय शक्ति के रूप में पुरुष वर्ग सम्मान देता था । यही कारण है की वेदों में और अन्य आर्ष ग्रंथों में नारी के लिए कहीं पर भी ऐसा कोई एक शब्द भी नहीं लिया गया, ऋषि-मनीषियों ने अपने-अपने ग्रंथों में उसकी गरिमा और महिमा को सम्मानित करने के पक्ष में अनेकों श्लोकों की रचना की । जिससे भारत वर्ष में दीर्घकाल तक नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा । नारी को पुरुष वर्ग ने सम्मान का स्थान दिया और उसे बराबरी के मौलिक अधिकार प्रदान कर उसके व्यक्तित्व के विकास में पुरुष वर्ग स्वयं भी सहायक बना । यही कारण है की हमारे यहाँ अपाला, घोषा, सावित्री, सीता, कौशल्या, गार्गी, मैत्रेयी आदि जैसी अनेको विदुषी सन्नारियों ने जन्म लिया ।

संदर्भ सूचि:

[1]. महिला सशक्तिकरण और भारत, राकेश कुमार आर्य, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २०२०
[2]. नारी विमर्श और अलका सरावगी का कथा साहित्य, प्रीति त्रिवेदी, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : २०१४
[3]. महिला उपन्यासकार एवं उनके नारी पात्र, डॉ दीनदयाल वर्मा, आर्य पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २०१०
[4]. अतिथि, शिवानी, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, नई दिल्ली, नौवाँ संस्करण : २०१६
[5]. तीन लघु उपन्यास (एक पत्नी के नोट्स, लड़कियाँ, प्रेम कहानी),ममता कालिया, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : २०२०
[6]. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली, प्रथम. सं. संस्करण : १९९३, दूसरा.सं. २००९
[7]. अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : २०००, छठा. सं. २०१६
[8]. कठगुलाब, मृदुलागर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, आँठवा.संस्करण, २०१९